माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की भाषा दक्षता के विकास में स्मार्टफ़ोन

लता*
अनु जी. एस.**
पी.डी. सुभाष***

वर्तमान डिजिटल युग में शिक्षा परिवर्तन के दौर से गुज़र रही है, जिसमें शिक्षार्थी को उच्च स्तर पर पारंपरिक दृष्टिकोण आधारित अधिगम के स्थान पर स्वयं नियंत्रित और अधिक लचीले प्रारूप की आवश्यकता प्रतीत हो रही है। अधिगम केवल कक्षा-कक्ष तक ही सीमित नहीं रह गया है। आज का शिक्षार्थी और माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक, सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (आई.सी.टी.) के माध्यम से स्वयं अधिगम करते हुए अपनी कई शैक्षिक समस्याओं का समाधान कर सकते हैं। आज के शिक्षार्थी हिंदी भाषा में अशुद्धियाँ कर रहे हैं, जिसका मुख्य कारण शिक्षकों में शुद्ध भाषा शिक्षण में असमर्थता का पाया जाना है। शिक्षण के इस स्तर पर शिक्षक अपनी भाषा में शुद्ध वर्तनी लाने के लिए एम-लर्निंग (मोबाइल-लर्निंग) के उपयोग से 'कहीं भी तथा कभी भी लर्निंग' का लाभ प्राप्त कर सकता है। इस लेख में माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की भाषा दक्षता एवं योग्यता के विकास में स्मार्टफ़ोन के प्रयोग पर अध्ययन दिया गया है। इसके साथ ही आज के इस तकनीकी दौर में, शुद्ध भाषा के रूप में सीखने के लिए एक ऐसे मॉडल की आवश्यकता को दर्शाया गया है, जिसके माध्यम से स्व-अधिगम के लिए स्मार्टफ़ोन को समस्या-समाधान उपकरण के रूप में प्रयुक्त कर, वर्तनी संबंधी समस्याओं के निदान एवं उपचार को प्रोत्साहित किया जा सकता है।

भाषा, अभिव्यक्ति का वह सांकेतिक साधन है जिसके द्वारा मनुष्य ध्वनि एवं लिपिगत रूप में अपने अनुभवों को व्यक्त करता है। भाषा को अनुकरण के माध्यम से ही सीखा जाता है। बच्चा वातावरण में जिस प्रकार की भाषा दूसरों को बोलते हुए सुनता है और लिखते हुए देखता है, उसे ही दोहराते हुए सीखने का प्रयत्न करता है। सीखना मानव जीवन की एक ऐसी सतत एवं जीवनपर्यंत चलने वाली प्रक्रिया है, जो मनुष्य को वातावरण के साथ सामंजस्य स्थापित करने में काफ़ी महत्वपूर्ण है।

भाषा अधिगम

भाषा अधिगम के संबंध में यह कहा जा सकता है कि भाषा को अर्जित करते हुए सीखा जा सकता है। बच्चा भाषा को प्रथम भाषा के रूप में अर्जित करने के लिए दूसरों के द्वारा प्रयुक्त शब्दावली का अनुसरण करते हुए एवं दोहराते हुए सीखता है। वह वातावरण के साथ सामंजस्य एवं अनुकरण करते हुए शुद्ध और सही भाषिक शब्दों एवं वाक्यों का प्रयोग करने के लिए नित्य प्रेरित होता है। भाषा को औपचारिक रूप

*शोधार्थी, शिक्षा विभाग, हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, ज़िला-कांगड़ा, हिमाचल प्रदेश 176206
**असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, शिक्षा विभाग, हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, ज़िला-कांगड़ा, हिमाचल प्रदेश 176206
***एसोसिएट प्रोफ़ेसर, योजना एवं अनुवीक्षण प्रभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली 110016

© NCERT not to be republished

से सिखाने का कार्य विद्यालय में भाषा शिक्षण के माध्यम से किया जाता है, जहाँ भाषा संबंधित ज्ञान को समृद्ध करने के लिए क्रिया पक्ष को प्रधानता देते हुए, विद्यार्थियों को शुद्ध भाषा प्रयोग का अभ्यास करवाया जाता है।

भाषा अधिगम की प्रक्रिया नियमों एवं व्याकरण पर आधारित होती है, जो व्याकरणिक नियमों की सहायता से सिखाई जाती है। भाषा के अध्ययन के लिए बच्चे की अर्जित भाषा का प्रयोग किया जाता है तथा समय-समय पर नियमों का स्मरण करवाने के लिए वास्तविक उदाहरणों का संकेत दिया जाता है। भाषा अधिगम के लिए भिन्न-भिन्न शिक्षण विधियों का प्रयोग भी किया जाता है, जिसके आधार पर विद्यार्थियों को भाषा के मौखिक एवं लिखित रूप से अवगत करवाते हुए, उनकी रचना शक्ति को बढ़ाने का प्रयत्न किया जाता है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 में, भाषा के महत्व को दर्शाते हुए कहा गया है कि भाषा की शिक्षा को मात्र एक स्कूली विषय के रूप में नहीं देखा जाए, बल्कि विद्यार्थी के समग्र विकास के रूप में देखा जाए। विद्यार्थी का भाषा पर अधिकार शिक्षा का सबसे महत्वपूर्ण पहलू है। भाषा के माध्यम से ही शिक्षा के अन्य विषयों, जैसे— विज्ञान, गणित, सामाजिक विज्ञान आदि में भी विद्यार्थियों की पहुँच मज़बूत होती है। भाषा ही बच्चे को विचार करने, निर्णय लेने, तर्क देने में सक्षम बनाती है। भाषा ही विद्यार्थी में समझ विकसित करने का प्रमुख आधार होती है। यह विद्यार्थी के दृष्टिकोण, रुचियों, क्षमताओं तथा मूल्यों व मनोवृत्तियों को आकार देती है। भाषा मात्र साधन नहीं है, बल्कि अर्थ को समझ पाने की प्रक्रिया का महत्वपूर्ण रूप भी है। इस प्रकार, भाषा-शिक्षण द्वारा विद्यार्थी भाषा के कौशल — श्रवण, वाचन, पठन, लेखन आदि से अवगत होना चाहिए।

माध्यमिक विद्यालयों में भाषा अधिगम की स्थिति

आज का युग विकास का युग है, जिसमें विद्यार्थी नई-नई तकनीकों के प्रयोग से अपने ज्ञान में वृद्धि कर रहे हैं। यह तकनीकें हमें बदलते समय एवं परिस्थितियों के अनुरूप मिल रही हैं। पहले विद्यार्थी केवल कक्षा-कक्ष में शिक्षक एवं पुस्तकों तक ही सीमित था; जबकि आज का शिक्षार्थी नवीन तकनीकों का प्रयोग कर अपनी समस्याओं का समाधान कर सकता है।

आज भी यदि हम विद्यालयों में जाएँ तो हमें कक्षा में कई ऐसे विद्यार्थी मिलेंगे जो प्रारंभिक भाषिक ज्ञान में काफ़ी पिछड़े हुए हैं। कई विद्यार्थी अक्षरों, शब्दों और वाक्यों को पढ़ने में असमर्थ हैं। अध्ययनों से पता चला है कि विद्यार्थी विद्यालयी शिक्षा के दौरान भाषा के बुनियादी कौशल नहीं सीख पा रहे हैं। प्रारंभिक एवं माध्यमिक शिक्षा में अधिगम उपलब्धि के निम्न स्तर के कई कारण हो सकते हैं, जैसे— भाषा की अज्ञानता, शारीरिक दोष, प्रादेशिकता या उचित मार्गदर्शन की कमी। अज्ञानता शुद्ध व्याकरण की जानकारी के अभाव में होती है। जबकि विद्यार्थी की भाषा विकास संबंधी अक्षमता भाषिक विकास में बाधक बनती है। प्रदेश विशेष की भाषा का प्रभाव भी विद्यार्थी को मुख्य भाषा के शुद्ध प्रयोग में बाधक बनाता है, जो अत्यधिक एवं लगातार अभ्यास से सुधारा जा सकता है। अगला कारण उचित एवं शुद्ध मार्गदर्शन की कमी है अर्थात् प्रारंभिक एवं माध्यमिक

© NCERT not to be republished

स्तर के शिक्षकों में भाषिक अशुद्धता एवं उचित निर्देशन की कमी का होना। यदि विद्यार्थी को शुद्ध मार्गदर्शन न मिले तो विद्यार्थी शिक्षक के आदर्श वाचन को ही शुद्ध मान लेता है जो विद्यार्थी के ज्ञान प्राप्ति के मार्ग में अवरोधक सिद्ध होता है। मानव संसाधन विकास मंत्रालय, राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान, 2009 में कहा गया है कि, "शिक्षक विद्यार्थियों की क्षमता पहचान कर उनका मार्गदर्शन करें।" सही मार्गदर्शन विद्यार्थी में रुचि जाग्रत करता है, आगे बढ़ाता है और उन्हें ऊँचाइयों पर ले जाता है। शिक्षक के शुद्ध भाषा प्रयोग द्वारा ही विद्यार्थियों को शुद्ध भाषा के प्रयोग के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है।

शिक्षकों की शुद्ध भाषिक क्षमता के विकास का कार्य शिक्षक-प्रशिक्षण काल में, शुद्ध भाषा प्रशिक्षण द्वारा तथा सेवारत शिक्षकों को समय-समय पर विभिन्न कार्यशालाओं, सेमिनारों एवं पुनश्चर्या पाठ्यक्रम के माध्यम से ज्ञान एवं जानकारी से अवगत करवाकर किया जा सकता है। विद्यालयी शिक्षा में गुणात्मक सुधार के लिए आवश्यक है कि शिक्षकों का लगातार शैक्षिक समृद्धिकरण हो ताकि वे प्राप्त जानकारी एवं सामग्री अध्ययन-अध्यापन की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकें। साथ ही माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के भाषिक दायरे और वैचारिक समृद्धि को विकसित करने की आवश्यकता है ताकि वे भाषिक रूप से इतना सक्षम हो जाएँ कि हिंदी उनके विमर्श और ज्ञान-विज्ञान की भाषा बन सके। भाषा के शुद्ध ज्ञान एवं भाषा संबंधी समस्याओं के समाधान के लिए प्रभावी शिक्षकों की व्यवस्था होनी चाहिए जो स्वयं अधिगम के आधार पर अपने भाषिक ज्ञान को समय-समय पर निखार सकें।

शिक्षा आयोग (1964–66) ने सुझाव दिया था कि सेवारत शिक्षकों के प्रशिक्षण का आयोजन विश्वविद्यालयों और शिक्षक संगठनों द्वारा किया जाना चाहिए और हर पाँच वर्ष में इस तरह के कार्यक्रम में हर शिक्षक को दो-तीन महीने बिताने चाहिए। यह कार्यक्रम अनुसंधान के आँकड़ों के आधार पर निर्धारित होने चाहिए और प्रशिक्षण संस्थानों को वर्ष भर सेमिनार, कार्यशालाएँ, रिफ्रेशर कोर्स, ग्रीष्मकालीन इंस्टीट्यूट आयोजित करने चाहिए। शिक्षकों पर राष्ट्रीय आयोग (1983–85) ने शिक्षक केंद्रों का विचार सामने रखा जो एक मिलन मंच की तरह हो, जहाँ शिक्षक एकत्रित होकर अपने-अपने अनुभवों पर विचार-विमर्श करें। आचार्य राममूर्ति समीक्षा समिति (1990) ने संस्तुति दी कि रिफ्रेशर कोर्स आदि शिक्षकों की विशेष आवश्यकताओं से जोड़ दिए जाएँ और मूल्यांकन और उसके बाद फ़ॉलोअप की गतिविधियाँ भी इस योजना का हिस्सा बनें। *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005* के अनुसार सेवा-पूर्व शिक्षण और सेवाकालीन प्रशिक्षण के दौरान शिक्षकों का पर्याप्त अभिमुखीकरण हो और ऐसी क्षमता का विकास हो कि वे पाठ्यचर्या रूपरेखा की चुनौतियों को समझें तथा उनका सामना कर सकें। सेवाकालीन प्रशिक्षण विशेष रूप से शिक्षकों के कक्षानुभवों के संदर्भ में होने चाहिए (*राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005*)।

इस प्रकार की अनुशंसा होने पर भी शिक्षकों के लिए समय-समय पर सेवाकालीन प्रशिक्षण की कमी को अनुभव किया गया है। जिस प्रकार बदलते समय के साथ वातावरण और स्थितियों में परिवर्तन

© NCERT not to be republished

होता रहा है, समाज में शिक्षकों एवं विद्यार्थियों की भूमिका में भी परिवर्तन हुआ है तथा इन परिवर्तनों के आधार पर विद्यार्थियों की माँग में भी बदलाव हुआ है। उसी प्रकार शिक्षण के क्षेत्र में भी नवीन तकनीकों का विकास हुआ है। बदलते समय के साथ नई तकनीकों ने अधिगम के प्रारूप में भी परिवर्तन कर दिया है। आज का विद्यार्थी और शिक्षक समय की माँग के अनुसार केवल कक्षा-कक्ष एवं प्रशिक्षण पर ही निर्भर नहीं रह सकता है; वह स्वयं अधिगम के आधार पर अपने आप को अद्यतित (अपडेट) करना चाहता है जो आई.सी.टी. आधारित स्मार्टफ़ोन द्वारा संभव है। स्व-अधिगम के लिए एम-लर्निंग अर्थात् मोबाइल-अधिगम एक महत्वपूर्ण एवं लाभप्रद युक्ति है।

सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी

वर्तमान समय में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (आई.सी.टी.) सूचना क्रांति के रूप में मानव जीवन के हर क्षेत्र में समावेश कर चुका है। यह शिक्षा प्रक्रिया के सभी स्तरों एवं पक्षों को प्रभावित कर रहा है। शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया, दूरस्थ शिक्षा, मुक्त शिक्षा, प्रशिक्षण, कार्यक्रम निर्माण योजना, प्रश्न पत्र निर्माण, परीक्षा परिणाम तथा मूल्यांकन प्रक्रिया आदि में इसकी स्पष्ट छाप देखने को मिलती है। इस तकनीक का संबंध वैज्ञानिक तकनीकी के उन सभी साधनों से है जिनके माध्यम से त्वरित गति से सूचनाओं का उचित आदान-प्रदान संभव होता है। किसी तथ्य या सूचना को जानना एवं उसे उसी रूप में हस्तांतरित करना ही सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी है। पीटर (2014) के अनुसार, "सूचना तकनीकी ज्ञान, कौशल तथा अभिवृति प्रदान करने की एक नवीन तथा उभरती हुई विशिष्ट आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाली एक शैक्षिक प्रक्रिया है, जिसमें समय और स्थान के आयामों का शिक्षण एवं अधिगम में कोई हस्तक्षेप नहीं होता है। यह एक ऐसा व्यापक क्षेत्र है जो सूचना के संचालन की योग्यता सहित संचार के विभिन्न माध्यमों, जैसे— रेडियो, मोबाईल फ़ोन, टेलीविजन, कम्प्यूटर, हार्डवेयर और सॉफ़्टवेयर तथा इंटरनेट नेटवर्क की सेवाओं और उनके प्रयोग द्वारा सूचना के प्रसारण में भी सहायक है।"

संचार अगर आज के दौर की आवश्यकता है तो निश्चित तौर पर सूचना हर व्यक्ति का अधिकार है। शिक्षा के क्षेत्र में इस तकनीकी की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में इसके माध्यम से शिक्षार्थी एवं शिक्षक, दोनों ही सूचनाओं को एकत्र करने के विभिन्न स्रोतों, भंडारित करने के विभिन्न माध्यमों तथा संप्रेषित करने की विभिन्न तकनीकों से अवगत होने में समर्थ होंगे। शिक्षक इन तकनीकों का प्रयोग कर अपने शिक्षण कार्य को प्रभावी बनाने के लिए आवश्यक सूचनाओं को संग्रहित कर सकता है। यह माध्यमिक एवं उच्च स्तर के विद्यार्थियों की रचनात्मक एवं सृजनात्मक चिंतन की क्षमताओं को विकसित करने में भी सहायक है। आज के तकनीकी संचालित डिजिटल युग में शिक्षा परिवर्तन के दौर से गुज़र रही है, जिसमें शिक्षार्थी को उच्च स्तर पर पारंपरिक दृष्टिकोण आधारित अधिगम के स्थान पर स्वयं नियंत्रित और अधिक लचीले प्रारूप की आवश्यकता प्रतीत हो रही है। अधिगम केवल कक्षा-कक्ष तक ही सीमित नहीं रहा है। शिक्षार्थी और शिक्षक, दोनों ही आई.सी.टी. के माध्यम से स्वयं अधिगम करते हुए अपनी कई समस्याओं का समाधान कर सकते हैं। 1993 की यशपाल समिति की रिपोर्ट, 'शिक्षा बिना बोझ के' में कहा गया है कि

'इन शिक्षक-शिक्षा कार्यक्रमों में इस बात पर ज़ोर दिया जाना चाहिए कि प्रशिक्षुओं में स्वयं-अधिगम और स्वतंत्र-चिन्तन का विकास हो सके।' इसके साथ ही *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005* के अनुसार, 'शिक्षा कार्यक्रमों की पहुँच को बढ़ाने में, व्यवस्था के प्रबंधन में और शिक्षा संबंधी विशिष्ट आवश्यकताओं की पूर्ति करने में तकनीकी का विवेकपूर्ण उपयोग सराहनीय हो सकता है।' इलेक्ट्रोनिक-अधिगम अर्थात् ई-लर्निंग के रूप में विद्यार्थी विभिन्न तकनीकी साधनों के समूह का प्रयोग कर अपने अधिगम के स्तर का विस्तार करते हुए उसे अधिक प्रभावी बनाता है। यह तकनीकी ज्ञान शिक्षार्थियों और शिक्षकों को शिक्षण परिसर के भीतर और बाहर, कभी भी एवं कहीं भी अपनी सुविधानुसार अध्ययन करने हेतु प्रोत्साहित करती है।

भारत एक बहुसांस्कृतिक एवं बहुभाषिकता वाला देश है। अतः कोई भी शिक्षक भाषा शिक्षण के दौरान प्रदेश की प्रादेशिक भाषा के प्रभाव को नकार नहीं सकता है और उसे भाषा के मानक रूप का अनुसरण करना होगा जिसे वह विद्यालय में विद्यार्थियों को उनकी भाषा सहित भाषा के मानक रूप से परिचित करवाएगा। इसके लिए वह स्मार्टफ़ोन सहायक भाषा अधिगम का प्रयोग कर सकता है।

भाषा अधिगम में समस्याओं के उपचार के लिए स्मार्टफ़ोन की भूमिका

वर्तमान समय में स्मार्टफ़ोन प्रौद्योगिकी अत्यधिक प्रचलित प्रौद्योगिकी है जो शिक्षा के क्षेत्र में नवीन क्रांति लेकर उभरी है। अधिगम के क्षेत्र में स्मार्टफ़ोन उपकरणों के प्रति आकर्षण बढ़ता जा रहा है। स्मार्टफ़ोन एवं विभिन्न परिवहनीय और वाई-फ़ाई उपकरणों के व्यापक उपयोग ने पारंपरिक शिक्षण विधि और अधिगम प्रक्रिया को बदल दिया है (कुकुलस्का-हमे, 2009)। इन मोबाइल उपकरणों की सहायता से लोग अपनी समस्याओं के समाधान के लिए तत्पर हो रहे हैं। भाषा शिक्षण के क्षेत्र में भी यह उपकरण महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। मोबाइल ऐप्लीकेशन (ऐप) के माध्यम से हिंदी व अंग्रेज़ी भाषा के शिक्षण का कार्य और भी आसान हो रहा है।

इंटरनेट की सुविधा के कारण कई सारी ऐप्लीकेशन भाषा शिक्षार्थियों को स्वयं भाषा अधिगम करते हुए, अपनी भाषा संबंधी अशुद्धियों एवं समस्याओं को दूर करने के लिए प्रेरित कर रही हैं, जो इंटरनेट ब्राउसर की सहायता से निःशुल्क एवं शुल्क का भुगतान कर, स्मार्टफ़ोन पर आसानी से उपलब्ध हो जाती हैं। भाषिक अशुद्धता का उपचार करने के लिए उच्च स्तर की शिक्षा के शिक्षार्थी मोबाइल उपकरणों का प्रयोग कर स्वयं ही समस्या का समाधान खोजने के लिए विभिन्न हिंदी भाषा अधिगम संबंधी ऐप्लीकेशन की सहायता ले सकते हैं। मोबाइल उपकरणों की विशेषताएँ— सुवाह्यता (कहीं भी ले जाना) एवं अभिगम्यता (पहुँच) भाषा शिक्षण और अधिगम की वृद्धि में प्रमुख भूमिका निभाती हैं (हुसैन और क्रोंजे, 2010)। इन उपकरणों की सुवाह्यता तथा अभिगम्यता के आधार पर अधिगम सामग्री को आसानी से ग्रहण किया जा सकता है। इस प्रकार, विभिन्न प्रकार की ऐप्लीकेशन के विकास और संचालन से भाषा अधिगम को सरल बनाने का प्रयत्न किया जा रहा है। स्मार्टफ़ोन उपकरण सभी के पास उपलब्ध होने के कारण यह 'कहीं भी तथा कभी भी लर्निंग' की अवधारणा को दर्शाता है।

© NCERT not to be republished

इंटरनेट की आसान पहुँच एवं उपलब्धता के साथ, लोगों द्वारा बातचीत एवं जानकारी का आदान-प्रदान मोबिलिटी या एक स्थान से दूसरे स्थान तक स्वतंत्र रूप में स्थानांतरित करने की क्षमता के आधार पर, इन उपकरणों का उपयोग काफ़ी सराहनीय है।

स्मार्टफ़ोन द्वारा उपलब्ध अधिगम की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं—

- **अभिगम्यता (एक्सेस)**— इंटरनेट के माध्यम से स्मार्टफ़ोन द्वारा ऑनलाइन अधिगम शिक्षार्थी को आसानी से भाषा अधिगम सामग्री तक पहुँचाता है।
- **लचीलापन (फ़्लेक्सिबिलिटी)**— स्मार्टफ़ोन द्वारा भाषा अधिगम की व्यवस्था में समय एवं स्थान की बाध्यता नहीं होती। शिक्षार्थी इंटरनेट की सहायता से कभी भी तथा कहीं भी अधिगम संबंधी कार्य में संलग्न हो सकते हैं तथा अपनी भाषा संबंधी त्रुटियों का निवारण कर सकते हैं।
- **प्रतिक्रिया (रिस्पॉन्स)**— स्मार्टफ़ोन में शिक्षार्थी को तुरंत प्रतिपुष्टि प्राप्त होने की पूर्ण संभावना होती है जो शिक्षार्थी के अनुभवात्मक अधिगम को बढ़ाने में सहायक है।
- **दोहराव (रिपीटेबिलिटी)**— स्मार्टफ़ोन की सहायता से शिक्षार्थी समस्यात्मक पाठों का पुनः दोहराव कर भाषा में प्रवीणता प्राप्त करने तक प्रयत्न कर सकता है।
- **स्थिरता एवं स्थायित्व (ड्यूरेबिलिटी)**— स्मार्टफ़ोन में इंटरनेट की सुविधा सप्ताह के सातों दिन एवं 24 घंटे उपलब्ध होने से अधिगम का यह प्रारूप शिक्षार्थी के लिए स्थिर एवं स्थायी रूप से सहायक सिद्ध होता है। हर समय एवं हर स्थिति में इस सुविधा के उपलब्ध रहने से भाषा अधिगम के लिए शिक्षार्थियों को प्रेरणा मिलती है।
- **साधन/रूपात्मकता (मॉडेलिटी)**— इंटरनेट एक बहु-साधन अधिगम उपकरण है जो कई प्रकार की ग्रहणशील संज्ञान संबंधी जानकारी उपलब्ध करवाते हुए शिक्षार्थी के भाषिक ज्ञान अर्जन में सहायक है।
- **विशिष्टता (स्पेसिफ़िसिटी)**— इंटरनेट की सुविधा भाषा अधिगम प्रेरक शिक्षार्थियों को यह स्वतंत्रता देती है कि वह क्या और किसके साथ सीखना चाहते हैं। शिक्षार्थी अपनी आवश्यकता और उपकरण या ऐप्लीकेशन की विशिष्टता के आधार पर उसे चुनकर अधिगम के लिए प्रयुक्त कर सकता है।
- **मूल्य (कॉस्ट)**— इंटरनेट के माध्यम से उपलब्ध ऐप्लीकेशन सॉफ़्टवेयर आर्थिक रूप से एक किफ़ायती साधन है जो किसी भी समय तथा कहीं पर भी आवश्यकता महसूस करने पर विस्तृत पहुँच के आधार पर प्रयुक्त किया जा सकता है।

इस प्रकार, संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि स्मार्टफ़ोन भाषा अधिगम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जो एक शिक्षक और शिक्षार्थी को अभिगम्यता, लचीलापन, प्रतिक्रियात्मकता, दोहराव क्षमता, स्थायित्व, विशिष्टता एवं मूल्यपरक विशेषताओं एवं विस्तृत सामग्री उपलब्ध करवाते हुए सहयोगात्मक लेखन एवं अधिगम को सक्षम बनाता है। स्मार्टफ़ोन माध्यमिक स्तर पर भाषा अधिगम के पाठ्यक्रम को सुगम बनाने तथा प्रामाणिक एवं रचनात्मक संप्रेषण का निर्माण करने में शिक्षक को सहयोग प्रदान करता है।

मोबाइल अधिगम अर्थात् एम-लर्निंग 'लर्निंग ऑन द मूव' के सिद्धांत पर आधारित एक प्रभावी शैक्षिक माध्यम के रूप में उभरकर सामने आया है।

© NCERT not to be republished

इसमें इंटरनेट एक सक्रिय भूमिका निभा रहा है। इंटरनेट का सुविधापूर्वक एक्सेस होने के कारण मोबाइल डिवाइसेस लोगों को शिक्षा के क्षेत्र में अधिगम से जोड़ने में अधिक सफल हुए हैं। आज के दौर में शिक्षा विभिन्न माध्यमों से साधारण जनता तक पहुँची है। ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म पर शिक्षा प्रेमी व्यक्तियों के लिए वीडियो लेक्चर, शब्द-चित्र एवं लिखित सामग्री जैसी सुविधाएँ विश्व के कोने-कोने पर उपलब्ध हो रही हैं। वैज्ञानिकों, विशेषज्ञों, शिक्षार्थियों और रिसर्च स्कॉलरों के लिए ऑनलाइन सर्विसेस और ऐप्लीकेशन के माध्यम से डाटा एक्सेस व डाटा एनालिसिस की प्रक्रिया और भी आसान हो गई है। नए स्मार्ट जी.पी.एस. आधारित स्मार्टफ़ोन ऐप्लीकेशन, ई-जर्नल, वेब-लेक्चर, वर्चुअल कॉन्फ्रेंस, मोबाइल-कोलेबरेशन टूल्स और एम-लर्निंग जैसे शब्द इस मोबाइल तकनीकी की वजह से ही सुनाई दे रहे हैं। "एम-लर्निंग शिक्षार्थी की बुद्धिमता पर आधारित है; यह भाषा अधिगम के लिए उचित स्थान व समय के प्रयोग पर आधारित है, जिसका निर्णय शिक्षार्थी के हाथों में निहित होता है" (कुकुल्सका-हमे, 2009)।

आज के समय में भाषा सीखने में मोबाइल प्रौद्योगिकी तथा मोबाइल ऐप्लीकेशन (ऐप्स) एक अनिवार्य अंग के रूप में हैं। अधिगम में इनके उपयोग की पद्धति को एम-लर्निंग अर्थात् मोबाइल लर्निंग कहा जाता है। जो स्वतंत्र व सक्रिय अधिगम को बढ़ावा देते हुए शैक्षिक संस्थानों में अत्यधिक प्रयुक्त हो रही है। इस क्षेत्र में कंप्यूटर सहायक भाषा अधिगम (कंप्यूटर असिस्टेंड लैंग्वेज लर्निंग— सी.ए.एल.एल.), मोबाइल सहायक भाषा अधिगम (मोबाइल असिस्टेड लैंग्वेज लर्निंग—एम.ए.एल.एल.) तथा स्मार्टफ़ोन सहायक भाषा अधिगम (स्मार्टफ़ोन असिस्टेड लैंग्वेज लर्निंग— एस.पी.ए.एल.एल.) का विकास एवं प्रयोग होता दिखाई दे रहा है। एम-लर्निंग स्वयं अधिगम, स्वतंत्र अधिगम, औपचारिक व अनौपचारिक अधिगम, मोबाइल उपकरणों की सर्वव्यापकता तथा अंतर्क्रियाशीलता (परस्पर सहयोगी) आदि के साथ शिक्षकों की भूमिका को कुशल बनाता है।

संबंधित साहित्य का पुनरवलोकन

शिक्षा के क्षेत्र में भाषा अधिगम के लिए स्मार्टफ़ोन को एक माध्यम के रूप में प्रयुक्त करने वाले कुछ अध्ययन किए गए हैं, जो स्मार्टफ़ोन को शिक्षण एवं अधिगम के लिए सकारात्मक परिणाम देने में उचित युक्ति मानते हैं, जिनमें हाश्मी, अजिजेंजाद, नजाकी और नेसरी (2011) ने अपने संयुक्त शोध पत्र "व्हाट इज़ मोबाइल लर्निंग? चेलेंजिस एंड केपेबिलिटीज़" में मोबाइल लर्निंग, उसके उपयोग, विभिन्न तकनीक एवं उपकरण, उसकी उपलब्धता, महत्व तथा हानियों का वर्णन करते हुए यह दर्शाया है कि सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के संसार में, मोबाइल अधिगम सबसे महत्वपूर्ण एवं उपयोगी उपकरण है, जो आज के युवा वर्ग में भाषा अधिगम के लिए आवश्यक सामग्री की सुविधा प्रदान करता है।

लिस, तोही और कुक (2015) ने अपने शोध पत्र "स्मार्टफ़ोन असिस्टेड लैंग्वेज लर्निंग एंड ऑटोनोमी" में विद्यार्थियों में भाषा अधिगम में स्मार्टफ़ोन के उपयोग के प्रभाव को दर्शाया है। इस शोध में इन्होंने एक प्रयोग किया जिसमें विद्यार्थियों के एक समूह को भाषा अधिगम में स्मार्टफ़ोन के प्रयोग के लिए निर्देशित किया गया; जबकि दूसरे समूह को

© NCERT not to be republished

स्मार्टफ़ोन से वंचित रखा गया। निष्कर्षतः स्मार्टफ़ोन सहायक भाषा अधिगम (एस.पी.ए.एल.एल.) के प्रयोग के लिए प्रोत्साहित विद्यार्थी स्वयं अधिगम में अच्छे परिणाम प्राप्त कर सकते हैं।

स्टोक्वेल और ली (2015) के शोध पत्र "एंगेजिंग इन मोबाइल फ़ोन-बेस्ड एक्टिविटी फ़ॉर लर्निंग वोकेबुलरी — एन इन्वेस्टीगेशन इन जापान एंड ताइवान" में यह दर्शाया गया कि जापान और ताइवान के शिक्षार्थियों द्वारा भाषा अधिगम के लिए डेस्कटॉप आधारित कंप्यूटर गतिविधियों के बजाय मोबाइल फ़ोन आधारित गतिविधियों को अधिक मात्रा में प्रयुक्त किया गया। इस पत्र में इन्होंने मोबाइल अधिगम में स्मार्टफ़ोन के प्रभाव तथा मोबाइल के सामाजिक पहलू आदि का वर्णन किया। इस अध्ययन के लिए दोनों शहरों में विद्यार्थियों से स्मार्टफ़ोन पर भाषा अधिगम संबंधी कई गतिविधियाँ करवाई गईं। स्टोक्वेल (2015) ने इस पत्र में अपने पूर्व (2007–2009) के अध्ययन के परिणामों (जो 2010 में प्रकाशित हुए थे) से भी तुलना की। इसके आधार पर यह कहा गया कि स्मार्टफ़ोन आधारित गतिविधियाँ भाषा अधिगम के स्तर को बढ़ाने में सहायक हैं।

गंगैमरण और पशुपति (2017) ने अपने शोध पत्र "रिव्यू ऑन यूज़ ऑफ़ मोबाइल ऐप्स फ़ॉर लैंग्वेज लर्निंग" में इंटरनेट की सहायता से अंग्रेज़ी भाषा के भाषाई कौशल के शिक्षण में प्राथमिक, माध्यमिक एवं विश्वविद्यालय स्तर के विद्यार्थियों के लिए अंग्रेज़ी भाषा ऐप्लीकेशन की प्रभावशीलता का अध्ययन किया। लेकवैल (2017) ने अपने शोध पत्र "द इम्पैक्ट ऑफ़ स्मार्टफ़ोन एंड इंटरनेट यूज़र्स ऑन इंग्लिश लैंग्वेज लर्निंग" में उन्होंने शिक्षण एवं अधिगम प्रक्रिया में तकनीकी के विकास से इंटरनेट एवं स्मार्टफ़ोन के प्रयोग द्वारा विद्यार्थियों की रुचि एवं दृष्टिकोण के आधार पर प्रभावी अधिगम को दर्शाया है। इसमें अंग्रेज़ी के शिक्षकों एवं विद्यार्थियों, दोनों के लिए अध्ययन सामग्री एवं शिक्षण प्रविधि के चुनाव में सहायता मिलती है। इन उपकरणों के प्रयोग से शिक्षक तथा विद्यार्थी, दोनों ही अधिक सक्रिय एवं क्रियाशील बनते हैं तथा उनमें आलोचनात्मक शक्ति का भी विकास होता है।

गोडविन-जोंस (2017) ने अपने शोध पत्र "स्मार्टफ़ोन एंड लैंग्वेज लर्निंग" में भाषा अधिगम और साक्षरता शिक्षा में स्मार्टफ़ोन जैसे डिवाइस की विकसित विशेषताओं को दर्शाया है। उन्होंने स्मार्टफ़ोन को जीवन साथी, भाषा अधिगम की योग्यता संबंधी उपकरण, परिवर्तनकारी उपकरण, स्थान एवं समय आधारित अधिगम, स्थानीय संस्था एवं वैश्विक पहुँच के लिए उपयोगी उपकरण, व्यक्तिगत सशक्तिकरण को स्थापित करने वाला उपकरण कहा है। जो भाषा अधिगम को इन सभी पहलुओं के आधार पर विकसित करता है। होसान (2018) ने अपने शोध पत्र में ढाका इंटरनेशनल विश्वविद्यालय, बांग्लादेश के उच्च स्तर के विद्यार्थियों की अंग्रेज़ी भाषा अधिगम में स्मार्टफ़ोन एवं ऐप्लीकेशन सॉफ़्टवेयर के महत्व की व्याख्या की तथा साथ ही वहाँ के शिक्षकों एवं शिक्षार्थियों द्वारा इनके प्रयोग की भी व्याख्या की। इस पत्र के निष्कर्ष में उन्होंने दर्शाया है कि भाषा अधिगम के क्षेत्र में शब्दावली अधिगम, उच्चारण क्षमता एवं वाक्य निर्माण परीक्षण में अधिगमकर्ता स्मार्टफ़ोन और अंग्रेज़ी भाषा अधिगम ऐप्लीकेशन का सकारात्मक प्रयोग कर सकता है।

© NCERT not to be republished

उपरोक्त शोध अध्ययनों के वर्णन से यह स्पष्ट होता है कि स्मार्टफ़ोन एवं उपलब्ध ऐप्लीकेशन भाषा शिक्षण में सकारात्मक परिणाम उपलब्ध करवाने में सहायक सिद्ध हो सकते हैं। स्मार्टफ़ोन सहायक भाषा अधिगम शिक्षकों एवं शिक्षार्थियों द्वारा स्वयं अध्ययन करते हुए अपनी भाषा व्याकरण एवं भाषा कौशल संबंधी सभी समस्याओं एवं त्रुटियों के निवारण व उपचार के लिए प्रयुक्त किए जा सकते हैं। शिक्षक अपने भाषिक एवं व्याकरण संबंधी ज्ञान को समसामयिक बनाने के लिए स्मार्टफ़ोन आधारित भाषा अधिगम ऐप्लीकेशन का प्रयोग करते हुए अपने विद्यार्थियों की भाषा संबंधी समस्याओं का निवारण कर सकता है।

स्मार्टफ़ोन में उपलब्ध भाषा अधिगम ऐप्लीकेशंस

स्मार्टफ़ोन भाषा अधिगम का एक अच्छा साधन है जो इंटरनेट की सहायता से मोबाइल पर ही शिक्षार्थियों को भाषा अधिगम के लिए आवश्यक जानकारी एवं अभ्यास सामग्री, विभिन्न ऐप्लीकेशन सॉफ़्टवेयर की सहायता से उपलब्ध करवाता है। स्मार्टफ़ोन में गूगल प्ले स्टोर की सहायता से इन भाषा अधिगम संबंधी ऐप्लीकेशन तक पहुँचा जा सकता है। अंग्रेज़ी भाषा अधिगम के लिए कई ऐप्लीकेशन हैं, जैसे— पोग्ग-स्पेल्लिंग एंड वर्ब्स, स्पीच विद मीलो ऐप्स, माइंड स्नैक, किड्स लर्न टू रीड, रोसेट्टा स्टोन, मेमोराईस, ओपन लैंग्वेज, ड्यूलिंगो, फ़्लूएंट यू, साउंड राईट, स्पीच ट्यूटर, इंग्लिश पोडकास्ट फ़ॉर लर्नर, एग्ज़ाम वोकेबुलरी बिल्डर, लर्न इंग्लिश विथ basuu.com, सेन्टेंस बिल्डर फॉर iPad आदि। हिंदी भाषा आज के समाज की बहुत बड़ी आवश्यकता है, क्योंकि हिंदी भाषा भारत की राजभाषा है तथा अत्यधिक जनसंख्या हिंदी के शुद्ध रूप का प्रयोग करने में असमर्थ है, जो उच्च स्तर की शिक्षा की महत्वपूर्ण आवश्यकता के रूप में दिखाई दे रही है। स्मार्टफ़ोन से जुड़े हिंदी भाषा अधिगम के लिए ऐप्लीकेशन सॉफ़्टवेयर इस प्रकार हैं —

- **आर भाषा हिंदी**— एंड्रॉइड फ़ोन एवं आई-पैड के लिए गूगल प्ले स्टोर द्वारा डाउनलोड किया जा सकता है। यह ऐप्लीकेशन 2एस होल्डिंगस प्रा.लि.द्वारा निर्मित है। इस ऐप द्वारा हिंदी भाषा का ज्ञान करवाने के लिए शब्द, मात्राएँ, वर्ण— स्वर एवं व्यंजन आदि का ज्ञान एवं जानकारी दी जाती है। यह हिंदी भाषा के शुद्ध उच्चारण का ज्ञान भी करवाती है। आर भाषा हिंदी लाइट नाम से यह ऐप छोटे बच्चों को रंगीन अक्षरों एवं स्वरों के माध्यम से हिंदी वर्णमाला सीखने में सहायक है।
- **हिंदी भाषा क्विज़**— हिंदी भाषा क्विज़ ऐप्लीकेशन मुकेश हर्देहा द्वारा निर्मित है जो गूगल प्ले स्टोर द्वारा डाउनलोड किया जा सकता है। इस ऐप में हिंदी व्याकरण संबंधी प्रश्नों के माध्यम से हिंदी संबंधी समस्याओं का समाधान करने का कार्य किया जाता है, जिसमें अंग्रेज़ी को प्रथम भाषा एवं हिंदी को द्वितीय भाषा के रूप में सिखाया जाता है।
- **हिंदी भाषा बेसिक**— हिंदी भाषा बेसिक ऐप्लीकेशन जीनियस गेम्स द्वारा निर्मित की गई है। इसे गूगल प्ले स्टोर से डाउनलोड किया जा सकता है। इस ऐप में हिंदी भाषा संबंधी विभिन्न पाठों को चित्रों एवं ध्वनि के माध्यम से सिखाया जाता है। इसमें अंग्रेज़ी की सहायता से हिंदी भाषा सिखाई जाती है। यह ऐप हिंदी भाषा को अंग्रेज़ी में अनुवाद

© NCERT not to be republished

करते हुए हिंदी भाषा का शुद्ध अर्थ समझाती है। 'हिंदी मात्रा और शब्द' नाम से यह ऐप भाषा के शुद्ध लेखन में सहायता भी करता है।

- **लर्न हिंदी— स्पीक हिंदी**—लर्न हिंदी— स्पीक हिंदी ऐप्लीकेशन ATi स्टूडियोज़ द्वारा निर्मित की गई है जिसे गूगल प्ले स्टोर से एंड्राइड फ़ोन के लिए नि:शुल्क डाउनलोड किया जा सकता है। यह एक प्रकार के कोर्स के रूप में कार्य करता है, जो प्रतिदिन 5 मिनट में भाषा संबंधी अभ्यास करवाता है। इस ऐप में हिंदी व्याकरण के ज्ञान एवं जानकारी के लिए अभ्यासात्मक पाठों का निर्माण किया गया है। जिसमें क्रिया एवं उच्चारण सहित दिनचर्या में प्रयुक्त होने वाली भाषा का अभ्यास करवाया जाता है।
- **लर्न हिंदी भाषा**— लर्न हिंदी भाषा ऐप्लीकेशन Bhasha.io. द्वारा निर्मित है जो iOS डिवाइसेज़ के लिए गूगल प्ले स्टोर से नि:शुल्क डाउनलोड किया जा सकता है। इस ऐप में विद्यार्थियों के अधिगम स्तरों के आधार पर उपयुक्त स्तर का चुनाव करते हुए हिंदी भाषा में बोलना एवं लिखना सिखाया जाता है। इसमें हिंदी शब्द, वाक्यांश और शुद्ध उच्चारण सहित सही आचरण सिखाया जाता है। यह ऐप व्यक्तिगत अध्ययन को प्रोत्साहित करते हुए अंग्रेज़ी के माध्यम से हिंदी का ज्ञान करवाता है। यह ऐप शुद्ध भाषा अधिगम में एक प्रभावी उपकरण के रूप में है। इसमें हिंदी के साथ-साथ तमिल, तेलुगू और कन्नड़ भाषा भी सिखाई जाती है।
- **ड्रोप — लर्न हिंदी**— यह ऐप्लीकेशन गूगल प्ले स्टोर से नि:शुल्क डाउनलोड किया जा सकता है। यह ऐप कई भाषाएँ सिखाने में सहायक है। हिंदी भाषा में यह ऐप संप्रेषण हिंदी, शुद्ध शब्द और वाक्यांशों के प्रयोग के अभ्यास के आधार पर हिंदी भाषा के व्याकरण की जानकारी देता है। एक दिन में 5 मिनट के अभ्यास द्वारा हिंदी भाषा अधिगम कोर्स कराता है। यह ऐप कोरियन, जापानी, चीनी सहित 25 भाषाएँ सिखाता है।
- **लर्न हिंदी फ्री**— इस ऐप्लीकेशन को गूगल प्ले स्टोर से नि:शुल्क डाउनलोड किया जा सकता है। यह एक साधारण ऐप है जो ऑफ़लाइन भी सेवाएँ प्रदान करता है। इसकी सहायता से विद्यार्थी हिंदी शब्द, वाक्यांश और श्रव्य उच्चारण के उदाहरणों की सहायता से भाषा के शुद्ध प्रयोग को सीखते हैं। इसमें प्रश्नोत्तरी के माध्यम से हिंदी भाषा की जानकारी दी जाती है।
- **ड्यूलिंगो**— ड्यूलिंगो ऐप्लीकेशन गूगल प्ले स्टोर से नि:शुल्क डाउनलोड किया जा सकता है। यह भाषा अधिगम ऐप कई भाषाओं के अधिगम में सहायक है। इसमें सामान्य स्तर की हिंदी के लिए छोटे-छोटे सत्रों की व्यवस्था है। इस ऐप द्वारा खेल-खेल में हिंदी शब्दावली के विभिन्न शब्दों को सीखा जाता है। इसके एक टर्म में 34 घंटों के अधिगम की व्यवस्था की गई है।
- **गूगल अनुवादक**— गूगल ट्रांसलेटर अर्थात् गूगल अनुवादक एक महत्वपूर्ण एवं सर्वाधिक प्रयोग किया जाने वाला भाषा अधिगम ऐप्लीकेशन है, जिसे नि:शुल्क रूप में गूगल स्टोर से प्राप्त किया जा सकता है। यह अंग्रेज़ी से हिंदी तथा हिंदी से अंग्रेज़ी भाषा में अनुवाद करता है।
- **हेल्लो टॉक**— हिंदी भाषा अधिगम में हेल्लो टॉक एक रुचिकर एवं प्रगतिशील भाषा अधिगम ऐप है, जिसे गूगल प्ले स्टोर से डाउनलोड किया जा सकता है। यह ऐप नि:शुल्क उपलब्ध है। इसमें श्रव्य एवं श्रव्य-वार्तालाप, लिखित संदेश,

© NCERT not to be republished

चित्र-संदेश, श्रव्य-संदेश आदि के माध्यम से अधिगम किया जाता है। यह 100 भाषाओं के अधिगम की सुविधा प्रदान करता है।

इस प्रकार उपरोक्त वर्णन की सहायता से यह कहा जा सकता है कि स्मार्टफ़ोन तकनीकी साक्षरता और विकास को बढ़ावा देने में मोबाइल तकनीक अर्थात् डिजिटल ऑडियो, डिजिटल कैमरा, वॉयस-रिकार्डर, पेन स्कैनर तथा मोबाइल फ़ोन आदि की महत्वपूर्ण भूमिका द्वारा शिक्षकों के लिए अधिगम सामग्री उपलब्ध करवा रहा है। यदि शिक्षक और शिक्षार्थी अपनी हिंदी भाषा संबंधी समस्याओं का समाधान करना चाहते हैं तो उसके लिए सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी द्वारा विकसित स्मार्टफ़ोन के माध्यम से उपलब्ध विभिन्न हिंदी भाषा अधिगम ऐप्लीकेशन सॉफ़्टवेयर एक सार्थक एवं सराहनीय उपकरण के रूप में हैं; जो भाषा शिक्षण एवं अधिगम के लिए कभी भी एवं कहीं भी स्वयं अधिगम के लिए प्रयुक्त करने में सुविधाजन्य माध्यम हैं।

निष्कर्ष

इस लेख में हिंदी भाषा अधिगम के माध्यम के रूप में स्मार्टफ़ोन के प्रयोग पर बल दिया गया है जो इंटरनेट की सहायता से विभिन्न भाषा अधिगम ऐप्लीकेशन सॉफ़्टवेयर का प्रयोग कर भाषा शिक्षार्थियों की भाषिक समस्याओं के समाधान एवं उपचार की व्याख्या करता है। इन ऐप्लीकेशंस के माध्यम से हिंदी भाषा के व्याकरण की जानकारी प्राप्त करते हुए भी भाषिक अशुद्धता को दूर किया जा सकता है, जिस प्रकार लेख में वर्णित शोध अध्ययन पत्रों में दर्शाया गया है कि अंग्रेज़ी भाषा अधिगम को स्थापित एवं विकसित करने के लिए अंग्रेज़ी भाषा अधिगम ऐप्लीकेशन का सहारा लेने से अच्छे एवं सफल परिणाम प्राप्त किए जा सकते हैं। उसी प्रकार हिंदी भाषा के शुद्ध उच्चारण एवं वर्तनी के लिए हिंदी भाषा अधिगम संबंधी ऐप्लीकेशन का भी प्रयोग किया जा सकता है ताकि अच्छे परिणाम प्राप्त हो सकें। परंतु गूगल प्ले स्टोर पर उपलब्ध अधिकतम ऐप्लीकेशन अंग्रेज़ी भाषा को प्रथम तथा हिंदी भाषा को द्वितीय भाषा के रूप में ही सिखा रही हैं, साथ ही ये भाषा अधिगम ऐप प्राथमिक अधिगम प्रदान कर रही हैं, जो केवल प्रारंभिक स्तर के विद्यार्थियों के लिए काफ़ी लाभदायक सिद्ध हो सकता है। माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों तथा शिक्षण के कार्य में संलग्न शिक्षकों की हिंदी भाषिक समस्याओं के लिए उचित ऐप्लीकेशन सॉफ़्टवेयर की कमी है। *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005* के अनुसार, नयी तकनीक में अभिरुचि जाग्रत करने के लिए ज़रूरी है कि शिक्षक को स्वयं इन माध्यमों में कार्यक्रम बनाने का सीधा अनुभव हो। प्रशिक्षण संस्थानों में कंप्यूटर तथा अन्य तकनीकी सुविधाओं की उपलब्धता अपर्याप्त है। यह एक कारण है कि नयी सम्प्रेषण तकनीकी की संभावनाएँ विद्यालयों तथा प्रशिक्षण संस्थाओं का माहौल बदलने में पूरी भूमिका नहीं निभा सकी हैं।

इस प्रकार इन आधुनिक तकनीकों एवं इंटरनेट के माध्यम से शिक्षकों को स्व-अधिगम आधारित अध्ययन के लिए प्रोत्साहित करते हुए, उनके भाषिक ज्ञान में सुधार लाते हुए, प्रारंभिक शिक्षा के स्तर को सुधारा जा सकता है। चूँकि शिक्षकों में हिंदी भाषा के अधूरे ज्ञान का प्रभाव प्रारंभिक एवं माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों पर पड़ता है, जिसके कारण वह हिंदी भाषा के शुद्ध लिखित एवं मौखिक प्रयोग में असमर्थ

© NCERT not to be republished

हो रहे हैं। शिक्षकों के अपूर्ण ज्ञान का बोझ आने वाली पीढ़ी पर पड़ रहा है। वह भाषा के व्याकरण के उचित प्रयोग से वंचित हो रहे हैं, जिसके कारण वह अपने ज्ञान को शुद्ध भाषा में व्यक्त करने में असमर्थ हो रहे हैं। इस प्रकार, शिक्षा व्यवस्था के प्रारंभिक एवं माध्यमिक स्तर में सुधार लाने के लिए शिक्षा के स्वरूप में परिवर्तन लाना पड़ेगा। स्मार्टफ़ोन एवं इंटरनेट के प्रयोग द्वारा माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों को स्व-अधिगम द्वारा प्रोत्साहित करते हुए उन्हें अपनी समस्याओं का स्वयं समाधान निकालने के लिए प्रेरित किया जा सकता है।

सुझाव

स्मार्टफ़ोन, आई-पैड, इंटरनेट आदि उपकरण हमारे दैनिक जीवन की गतिविधियों का महत्वपूर्ण अंग बन चुके हैं। भाषा अधिगम के क्षेत्र में इन सभी उपकरणों ने स्वयं-निर्देशित अधिगम को परिवर्तित कर दिया है। इनके द्वारा हिंदी भाषा अधिगम ऐप्लीकेशन की उपलब्धता हिंदी भाषा के शुद्ध प्रयोग को प्रोत्साहित करती है। परंतु इन ऐप्लीकेशन में उपलब्ध सामग्री केवल छोटी कक्षाओं के विद्यार्थियों के लिए ही लाभदायक है। माध्यमिक शिक्षकों के लिए यह अधिक सहायक सिद्ध नहीं हो पा रहे हैं। इस तरह इस क्षेत्र में सभी हिंदी भाषा शिक्षकों के भाषिक शुद्धता संबंधी समस्याओं के उपचार के लिए भी स्वयं-अधिगम मॉड्यूल या ऐप्लीकेशन का निर्माण किया जाना चाहिए। जो प्रथम भाषा के रूप में हिंदी को हिंदी के माध्यम से सिखा सके। शिक्षक प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले शिक्षार्थियों की भाषिक शुद्धता के लिए भी ऐसे ऐप्लीकेशन होने चाहिए जो उन्हें उनकी हिंदी भाषिक शुद्धता के लिए सही निर्देश दे सकें तथा भावी शिक्षक सहित माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक भी सुगमता से कभी भी तथा कहीं भी इन्हें प्रयुक्त कर सकें। भारत जैसे देश में स्मार्टफ़ोन आधारित भाषा अधिगम में सहायक ऐप्लीकेशन के प्रति लोगों में जागरूकता की बहुत कमी है, जिसका मुख्य कारण है कि यहाँ बहुत कम संख्या में लोगों द्वारा स्मार्टफ़ोन का प्रयोग किया जाता है। इसके लिए हमें अधिक से अधिक संख्या में लोगों को स्मार्टफ़ोन के उपयोगों से अवगत कराते हुए इसके प्रयोग के लिए प्रोत्साहित करना होगा।

बदलते समय के अनुरूप मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार ने विभिन्न विषयों के ज्ञान एवं अधिगम के लिए 'स्वयं' ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म की व्यवस्था की है। इसी प्रकार विभिन्न राज्यों में प्रारंभिक एवं माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययन-अध्यापन करने वाले शिक्षक एवं शिक्षार्थियों के शुद्ध भाषिक ज्ञान के लिए भी उचित व्यवस्था होनी चाहिए।

© NCERT not to be republished

संदर्भ

कुकुल्सका-हमे, ए. 2009. विल मोबाइल लर्निंग चेंज लैंग्वेज लर्निंग? *रिकॉल*. 21(02). 16 अक्तूबर, 2019 को http://www.researchgate.net/publication/4279 से लिया गया है.

गंगैमरण, आर., और एम. पशुपति. 2017. रिव्यू ऑन यूज़ ऑफ़ मोबाइल ऐप्स फ़ॉर लैंग्वेज लर्निंग. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ एप्लाइड इंजीनियरिंग रिसर्च*. 12(21). 24 सितंबर, 2019 को http://www.ripublication.com से लिया गया है.

गोडविन-जोन्स, आर. 2017. स्मार्टफ़ोन एंड लैंग्वेज लर्निंग. *लैंग्वेज लर्निंग एंड टेक्नोलॉजी*. 21(2). 4 सितंबर, 2019 को http://llt.msu.edu/issues/june2017/emerging.pdf से लिया गया है.

पीटर, ए. और बी. फ्रैंक. 2014. यूज़िंग इनफ़ॉर्मेशन एंड कम्युनिकेशन टेक्नोलॉजी टू प्रिडीक्ट टीचर्स प्रोडक्टिविटी. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ इनोवेशन एंड साइंटिफ़िक रिसर्च*. 2(2). 2 सितंबर, 2019 को http://www.researchgate.net/publication/267567856. से लिया गया है.

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्. 2006. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005*. रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली. 22 अक्तूबर, 2019 को www.ncert.nic.in/rightside/links/pdf/framework/ncf_hindi_2005/ncf2005.pdf से लिया गया है.

भारत सरकार. 1990. *रिपोर्ट ऑफ़ द कमेटी फ़ॉर रिव्यू नेशनल पॉलिसी ऑन एजुकेशन— 1986* (आचार्य राममूर्ति समीक्षा समिति, 1990). नयी दिल्ली.

लिस, ए., कुक, एस., और ए.तोही. 2015. *स्मार्टफ़ोन असिस्टेड लैंग्वेज लर्निंग एंड ऑटोनोमी*. 17 अक्तूबर, 2019 को http://www.researchgate.net/publication/281102772 से लिया गया है.

लेकवैल, आर. एफ. जे. 2017. द इम्पैक्ट ऑफ़ स्मार्टफ़ोन एंड इंटरनेट यूसेज ऑन इंग्लिश लैंग्वेज लर्निंग. *इंग्लिश रिव्यू — जर्नल ऑफ़ इंग्लिश एजुकेशन*. 5(2). 16 अक्तूबर, 2019 को https://www.researchgate.net/publication/317366631_THE_IMPACT_OF_SMARTPHONE_AND_INTERNET_USAGE_ON_ENGLISH_LANGUAGE_LEARNING/link/595b507caca272f3c087db8से लिया गया है.

हाश्मी एम., अजिजेंजाद एम., नजाकी और ए. जे. नेसरी. 2011. व्हाट इज़ मोबाइल लर्निंग? चैलेंजिस एंड कैपबिलिटीज़. *प्रोसिडिया-सोशल एंड बिहेवियरल साइंस*. 30. 18 सितंबर, 2019 को http://www.sciencedirect.com से लिया गया है.

हुसैन और क्रोंजे. 2010. डिफ़ायनिंग मोबाइल लर्निंग इन द हाइयर एजुकेशन लैंडस्केप. *जर्नल ऑफ़ एजुकेशनल टेक्नोलॉजी एंड सोसाइटी*. 13(3). इंटरनेशनल फ़ोरम ऑफ़ एजुकेशनल टेक्नोलॉजी एंड सोसाइटी, ताइवान.

होसान, एम. 2018. एक्सप्लॉइटिंग स्मार्टफ़ोन एंड ऐप्स फ़ॉर लैंग्वेज लर्निंग — ए केस स्टडी विद द इ.एफ़.एल. लर्नर्स इन ए बांग्लादेशी यूनिवर्सिटी. *रिव्यू ऑफ़ पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन एंड मैनेजमेंट जर्नल*. 6(1). 5 अक्तूबर, 2019 को https://www.academia.edu/36307072/Exploiting_Smartphones_and_Apps_for_Language_Learning_A_Case_Study_with_The_EFL_Learners_in_a_Bangladeshi_University से लिया गया है.

स्टॉकवेल, जी. और ली वाई. 2015. एन्गैजिंग इन मोबाइल फ़ोन बेस्ड एक्टिविटीज़ फ़ॉर लर्निंग वोकेबुलरी—एन इन्वेस्टीगेशन इन जापान एंड ताइवान. *कैलिको जर्नल*. 32(2). 6 सितंबर, 2019 को http://eric.ed.gov/?q=Sources%3a% 22 CALICO +Journal%22&pg= 4&id=EJ1176698 से लिया गया है.

© NCERT not to be republished